P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-8* ISSUE-4* December- 2020
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

सफाई कामगारों की आर्थिक स्थिति एवं संचरना (मुरैना जिले की अम्बाह तहसील के संदर्भ में)

Economic Condition and Structure of Cleaning Workers (In reference to Ambah District Morena)

Paper Submission: 15/12/2020, Date of Acceptance: 26/12/2020, Date of Publication: 27/12/2020

रक्षा कम्ठान
सहायक प्राध्यापक,
समाजशास्त्र विभाग,
अम्बाह स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय,
अम्बाह, मुरैना म.प्र, भारत

सारांश

प्रस्तुत शोध प्रपत्र में सफाई कामगारों की आर्थिक स्थिति एवं सरंचना का विश्लेषण किया है इसमें सफाई कामगारों की आर्थिक स्तिथि आय खर्च उनका समाज में आर्थिक स्तर आदि के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त की गयी । अध्ययन में चयनित न्यायदर्श अम्बाह नगर पालिका में नौकरी करते है तथा ये नौकरी सड़क की सफाई, नालियों की सफाई या सीवर आदि की सफाई कार्य हेतु मिली है किन्तु इनके परिवार के अन्य सदस्य भी मैला सफाई का कार्य करते है।

चयनित न्यायदर्श में 16 प्रतिशत मजदूरी व 17 प्रतिशत सूअर पालन जैसे कार्यों में लगे है। अधिकांश उतरदाताओं की मासिक आय 5000 से 6000 रूपए तक है लेकिन अपनी आय का 4 प्रतिशत भाग ही निवास और शिक्षा पर खर्च करते है। उत्तरदाता का एक बहुत बड़ा भाग 23 प्रतिशत मादक पदार्थों पर खर्च होता है। यही दुष्प्रवर्तियाँ इनके जीवन स्तर को ऊँचा उठाने में बाधक है।

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्र में सफाई कामगारों की आर्थिक स्थिति का अध्ययन करना है। सफाई कामगारों की आर्थिक स्थिति अत्यन्त दयनीय है ये अपने पेशे से संतुष्ट नहीं है और परम्परागत पेशा छोड़ना चाहते हैं। इनके परिवार ऋणग्रस्तता से जूझ रहे हैं। शासकीय योजनाओं का लाभ अज्ञानता के कारण इन्हें नहीं मिल पा रहा है जीवन मे आई निराशा के कारण इनकी प्रगति की प्रक्रिया धीमी है। यद्यपि धीरे–धीरे जागरुकता का संचार हो रहा है।

The research paper analysis the economic condition and structure of cleaning workers (in reference to Ambah District Morena). This paper gives a detailed view of income, expenditure, and the economic status of cleaning workers. The selected sanitary workers work in Ambah Municipality. They doing the job of cleaning roads, severe lines, drainage systems, and canals but their other family member contribute to this work also.

60% selected workers doing the job of laborers and 17% pig rearing. Most of the answering candidates earn 5000-6000 Rs/ month but they spend only 4% of their income on living and education. 23% of their income expand on Narcotic substances. These vicious practices have hindered the raising of their standard of living.

The objective of the study presents is to study the economic status of sanitation workers in rural areas. The economic condition of the cleaning workers is extremely pathetic, they are not satisfied with their work and want to leave their traditional work. The families are struggling with debt. Due to the lack of knowledge, they are not getting the benefit of government schemes. Due to disappointment in their life, the process of their work is slow but slowly progress coming into their life.

मुख्य शब्द : समाज, अस्पृश्यता, सफाई कामगार, शुष्क शौचालय, आर्थिक स्थिति।
Society, untouchability, lavatory, economic condition, cleaning workers/ sanitation workers

प्रस्तावना

अस्पृश्यता भारतीय समाज की जाति व्यवस्था का अंग माना जाता है, किन्तु इसे जाति व्यवस्था के अभिन्न अंग के रूप में देखना जरूरी नहीं है। इस दृष्टिकोण के आधार पर हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि ''अस्पृश्यता उन्मूलन स्वयं जाति प्रथा के उन्मूलन से पहले संभव है।'' सफाई कामगार के रूप में अधिकांश भारत वर्ष में भंगी, मेहतर, डोम, वाल्मीक आदि जातियाँ कार्य करती हैं। ये सदैव अस्पृश्य मानी जाती हैं। इनको अछूत मानने के पीछे मुख्य कारण यह परिलक्षित होता है कि इनके परिवार अस्वच्छ कार्य में लगे हुये हैं। इनका यह कार्य परम्परागत रूप से चला आ रहा है। यद्यपि सुलभ शौचालय एवं शुष्क शौचालय ने सिर पर मैला उठाने की विवशता को कम कर दिया है। नगरपालिका ने भी हाथ–गाड़ी प्रदान करके इनके कार्य को सरल कर दिया है लेकिन शासन की प्रतिष्ठा योजना जैसी स्वस्थ योजनायें भी इन्हें ही इस धन्धे से मुक्ति नहीं दिला सकीं हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी कुछ काम इन्हें करने ही पड़ते हैं जैसे मृत पशुओं को ठिकाने लगाना, मृत पशुओं का चमड़ा उतारना, बच्चे के जन्म के अवसर पर दी जाने वाली कुछ सेवाएँ, मैला उठाना, सामूहिक भोज के समय जूठन उठाना, पत्तल उठाना आदि।

किसी भी जाति या कामगार समूह का अध्ययन करने में सबसे महत्वपूर्ण बिन्दु उनकी आर्थिक संरचना का अध्ययन करना होता है। आर्थिक व्यवस्था का प्रभाव व्यक्ति के सामाजिक सम्बन्धों पर पड़ता है। वर्तमान समय में सफाई कामगारों की समस्या सामाजिक नहीं है अपितु आर्थिक और राजनैतिक है। सफाई कर्मियों की आर्थिक दशाओं को जानने के लिये सर्वप्रथम इनकी आय–व्यय के प्रमुख स्त्रोत, इनकी आर्थिक स्थिति, खान–पान, व्यसन की बुरी आदतें, रहन–सहन, जीवन की दशाओं, ऋण ग्रस्तता आदि प्रमुख कारण हैं। प्रस्तुत अध्ययन में इनकी बचत की प्रवृत्ति तथा शासकीय योजनाओं के प्रति इन वर्गों की आम राय जानने का प्रयास किया गया है।

क्र0	आर्थिक स्थिति	संख्या	प्रतिशत
01	उच्च आर्थिक स्थिति	10	10:
02	मध्यम आर्थिक स्थिति	31	31:
03	निम्न आर्थिक स्थिति	59	59:
	योग	100	100:

शोध पद्धति

किसी भी विषय पर शोध कार्य करने के लिए अध्ययन पद्धिति का निर्धारण करना अत्यंत आवश्यक है। अध्ययन पद्धिति का निर्धारण करने से आशय है प्रयुक्त की जाने वाली प्रविधियों का चयन करने से, विषय से सम्बंधित अध्ययन क्षेत्र का निर्धारण करने से लिया जाता है। प्रस्तुत शोध पत्र का विषय– मुरैना जिला के अम्बाह तहसील में सफाई कामगारों की आर्थिक सरंचना का अध्ययन है इस विषय से सम्बंधित साहित्य एवं तथ्यों को संकलित करना व अध्ययन करना शोध कार्य को वैज्ञानिकता प्रदान करने की दृष्टि से आवश्यक है।

शोधार्थी ने प्राथमिक व द्वितीयक तथ्यों का संकलन आवश्यकता अनुसार किया है। द्वितीयक तथ्यों के संकलन के प्रमुख स्त्रोत के रूप में शोधार्थी ने समस्या से सम्बंधित प्रकाशित, अप्रकाशित साहित्य, पुस्तकों का सहारा लिया, प्राथमिक तथ्यों के संकलन के लिए शोधार्थी ने साक्षात्कार प्राविधि का प्रयोग किया।

प्रस्तुत शोध पत्र में मुरैना जिले के अम्बाह तहसील में नगरपालिका में कार्यरत सफाई कर्मचारियों का अध्ययन किया गया। अम्बाह तहसील में कुल 18 वार्ड हैं। इनमें लगभग 150 सफाई कर्मचारी कार्य करते हैं। इसमें नियमित कर्मचारी 39 हैं तथा दैनिक वेतन भोगी तथा निश्चित वेतनमान पर 71 कर्मचारी कार्यरत हैं। यह सभी वाल्मीक जाति के हैं। अध्ययन के समग्र में से 100 इकाईयों को निर्देशन के आकार के रूप में चुना गया। अध्ययन को वैज्ञानिक स्वरूप प्रदान करने तथा इकाईयों की सम्पूर्ण विशेषताओं को समाविष्ट कर प्रतिनिधिपूर्ण इकाइयों के चयन की दृष्टि से देव तथा उद्देश्यपूर्ण निर्देशन द्वारा इकाईयों का चयन किया गया तथा उनसे प्राप्त तथ्यों को निम्न तालिका में दर्शाया गया है

शोध प्रकल्पना

शोध प्रक्रिया का महत्वपूर्ण चरण है इससे शोध की प्रगति में आने वाले भटकावों से बचा जा सकता है। यह शोध का प्रथम चरण है शोधार्थी ये जान ले कि उसे क्या करना है ? कैसे करना है ? कब और कहाँ करना है । यह क्या करना है ही शोध उपकल्पना की उत्पत्ति का कारण है । यह एक काल्पनिक सामान्यीकरण है जिसका शोध के द्वारा परीक्षण किया जाता है।

प्रस्तुत शोध में मुरैना जिला के अम्बाह तहसील के सफाई कामगारों की आर्थिक सरंचना का अध्यन करने के लिए भी शोधार्थी के मन में कार्यकारी उपकल्पनायें जन्मित हुई जिसे इस रूप में शोधकर्ता ने व्यक्त किया है

1. सहज रोजगार एवं आमदनी सुलभ होने पर भी ये आर्थिक अभाव और दरिद्रता का जीवन व्यतीत करते है।
2. दुष्प्रवर्तियाँ इनका जीवन स्तर ऊँचा उठाने में बाधक है।
3. अधिकाँश सफाई कर्मचारी मधपान आदि के सेवन पर अपनी आय का अधिकांश भाग व्यय कर देते है।

प्रदत्त विश्लेषण, व्याख्या एवं परिणाम

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-8* ISSUE-4* December- 2020
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

तालिका क्र0 –.1
उत्तरदाताओं की स्वयं के समाज में आर्थिक स्थिति

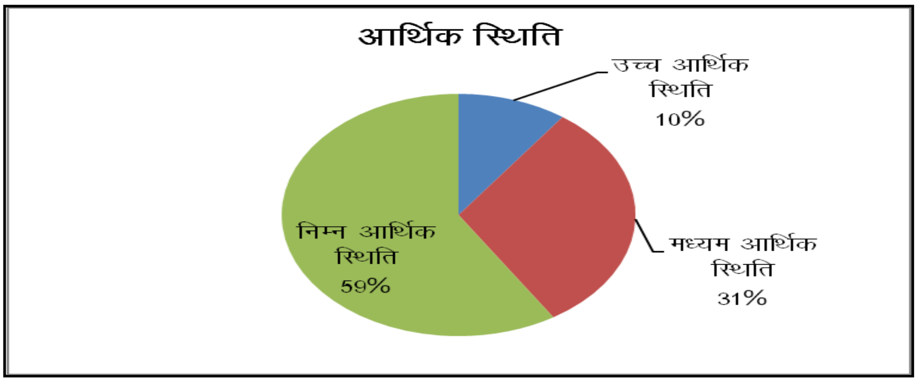

उपरोक्त तालिका के अवलोकन से स्पष्ट है कि 90 प्रतिशत उत्तरदाता निम्न एवं मध्यम आर्थिक स्तर वाले हैं जो इनकी कमजोर आर्थिक स्थिति की ओर हमारा ध्यान आकर्षित करते हैं। इनकी आय का प्रमुख स्त्रोत नगरपालिका में नौकरी, मजदूरी एवं जातिगत परम्परागत व्यवसाय सफाई कार्य है। शासकीय प्रयासों के बाबजूद इनकी आर्थिक स्थिति में कोई विशेष परिवर्तन दिखाई नहीं दे रहा है। इसका कारण योजनाओं की अव्यवहारिकता, प्रचलित कुरीतियाँ, स्वयं की बुरी आदतें, आत्मविश्वास की कमी प्रमुख कारण हैं।

मासिक आय और विभिन्न मदों पर व्यय

अधिकांश उत्तरदाताओं की मासिक आय 5000/– से 6000/– रुपये तक है। उत्तरदाता मासिक आय का व्यय किस प्रकार करते हैं यह जानने का प्रयास किया।

तालिका क्र0 – 02

क्र0	मद	संख्या	आय का प्रतिशत
01	निवास	02	02:
02	भोजन	40	40:
03	वस्त्र	09	09:
04	शिक्षा	02	02:
05	बीमारी	10	10:
06	मादक पदार्थ	23	23:
07	कार्ट कचहरी	02	02:
08	मनोरंजन	05	05:
09	आवागमन	02	02:
10	जुआ	05	05:
		100	100:

उपरोक्त तालिका के अवलोकन से स्पष्ट है कि उत्तरदाता अपनी आय का आधे से कम हिस्सा (40 प्रतिशत) भोजन पर व्यय करते हैं। निवास और शिक्षा पर बहुत कम अपनी आय का 4 प्रतिशत भाग ही खर्च करते हैं। उत्तरदाताओं की आय का एक बहुत बड़ा भाग 23 प्रतिशत मादक पदार्थों पर व्यय होता है। इससे इनका व्यक्तिगत व सामाजिक विघटन होता है।

मादक द्रव्य व्यसन सम्बन्धी

आय सम्बन्धी व्यय में पाया गया कि उत्तरदाता की आय का बहुत बड़ा भाग मादक पदार्थ के सेवन पर खर्च होता है। अपने परिवार की जरूरतों पर ध्यान न देकर पुरुष वर्ग नशें में मस्त रहता है। उत्तरदाताओं में महिला वर्ग भी नशा करती हैं। सफाई कामगारों में महिलायें तम्बाकू, गुटखा, बीड़ी आदि का सेवन अधिक मात्रा में करती हैं।

तालिका क्र0 – 03

क्र0	व्यसन की आदत	संख्या	प्रतिशत
01	केवल तम्बाकू सेवन एवं धूम्रपान करते हैं	12	12:
02	तम्बाकू सेवन एवं धूम्रपान और मद्यपान करते हैं	73	73:
03	तम्बाकू सेवन एवं धूम्रपान नहीं करते हैं	10	10:
04	तम्बाकू सेवन, धूम्रपान और मद्यपान दोनों नहीं करते है।	05	05:
		100	100:

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-8* ISSUE-4* December- 2020
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

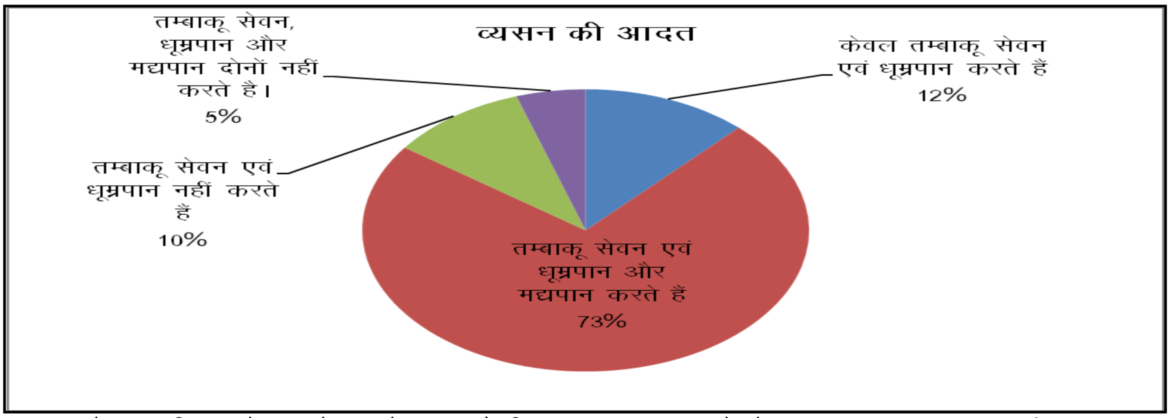

उपरोक्त तालिका के अवलोकन से स्पष्ट है कि अधिकांश उत्तरदाता (73 प्रतिशत) तम्बाकू सेवन एवं धूम्रपान मद्यपान दोनों करते हैं। अतः निम्न आर्थिक स्तर का एक कारण जहाँ इनकी आय का निम्न स्तर होता है, वहीं दूसरा महत्वपूर्ण कारण अनियोजित खर्च एवं बुरी आदतें, नशे व मद्यपान आदि पर क्षमता से अधिक खर्च करना है।

सफाई कामगारों की अपने पेशे के प्रति अभिरुचि

सर्वप्रथम सफाई कामगारों का अवलोकन किया गया। अधिकांश सफाई कामगार पैदल या साइकिल पर काम पर जाते हैं। लगभग आधे सफाई कामगारों का कार्य करने का तरीका परम्परागत है, हाँ इतना परिवर्तन अवश्य है कि अब उन्हें सिर पर मैला नहीं उठाना पड़ता है। सफाई कामगारों को नगरपालिका द्वारा हाथगाड़ी, तसले, झाड़ू, वर्दी व नहाने धोने के साबुन दिये जाते हैं। अधिकांश कामगार चार घण्टे तक काम करते हैं। वैसे इन चार घण्टों में काम कम तथा लापरवाही या समय पास करते हैं। जब कोई अधिकारी आदि निरीक्षण पर आता है तो विधिवत व्यवस्थित सफाई करते हैं अन्यथा नगरपालिका पंचायत में नियुक्त सफाई कर्मी ढंग से कार्य नहीं करते हैं।

सफाई कामगारों का अपने पेशे के प्रति कितनी रुचि है क्या वे अपने बच्चों को भी इसी व्यवसाय में लाना चाहते हैं ? इस सम्बंध में अधिकांश सफाई कामगार इस व्यवसाय से मुक्त होना चाहते हैं तथा अपने बच्चों को इस व्यवसाय में नहीं लाना चाहते हैं। उत्तरदाताओं की अपने पेशे के प्रति रुचि जानने के लिये अध्ययनकर्ता द्वारा अध्ययन क्षेत्र में सर्वेक्षण के दौरान उत्तरदाताओं से सीधा प्रश्न किया कि आपकी अपने पेशे के प्रति रुचि है जो तथ्य प्राप्त हुये उन्हें वर्गीकृत कर निम्न तालिका में प्रस्तुत किया गया है।

तालिका क्र0 – 04
सफाई कामगारों की अपने पेशे के प्रति रुचि

क्र0	पेशे के प्रति रुचि	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
01	बहुत कम	12	12:
02	कम	23	23:
03	बिल्कुल नहीं	65	65:
	योग	100	100:

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-8* ISSUE-4* December- 2020
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

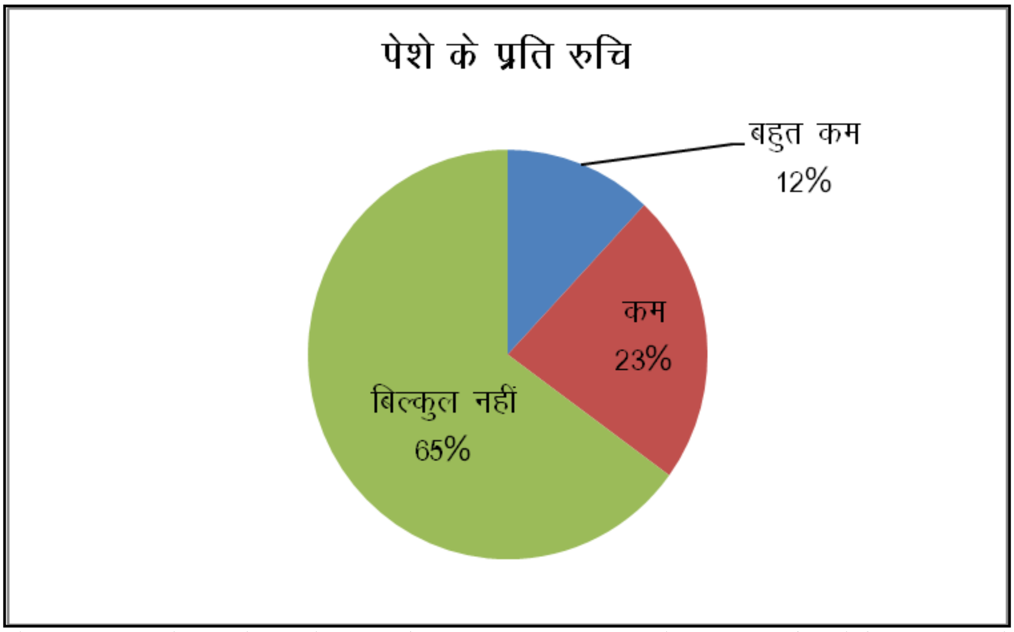

उपरोक्त तालिका के अवलोकन से स्पष्ट है कि अधिकांश उत्तरदाताओं (65 प्रतिशत) की अपने पेशे में बिल्कुल रुचि नहीं है। ये अपने पेशे को घृणित तथा निम्न कोटि का मानते हैं। अधिकांश उत्तरदाता परम्परागत रूप से इसे अपनाये हुये हैं और कहते हैं कि यह न करें तो क्या करें ? जबकि 23 प्रतिशत उत्तरदाताओं की अपने पेशे के प्रति रुचि कम थी। वे अपने पेशे को नियति मानकर चल रहे हैं। 12 प्रतिशत ऐसे भी उत्तरदाता हैं जो अपने पेशे में पूर्ण रुचि रखते हैं इनका मत है कि व्यवसाय तो व्यवसाय है, कोई भी काम छोटा या बड़ा नहीं है।

वैकल्पिक व्यवसाय

अधिकांश सफाई कामगार पेशे से संतुष्ट नहीं हैं तो वे क्या कोई अन्य वैकल्पिक व्यवसाय अपनाना चाहते हैं। शोधार्थी ने उत्तरदाताओं से यह जानने का प्रयास किया। उत्तरदाताओं से जो तथ्य प्राप्त हुये ये निम्न तालिका में प्रदर्शित किये गये हैं

तालिका क्र0 – 05

क्र0	व्यवसाय	संख्या	प्रतिशत
01	मुर्गी पालन	10	10:
02	सुअर पालन	17	17:
03	मजदूरी	16	16:
04	हम्माली	12	12:
05	तकनीकी व्यवसाय	06	06:
06	सरकारी नौकरी	39	39:
	योग	100	100:

उपरोक्त तालिका के अवलोकन से स्पष्ट है कि सर्वाधिक 39 प्रतिशत उत्तरदाता वैकल्पिक व्यवसाय के रूप में सरकारी नौकरी चाहते हैं। यदि उन्हें सरकारी नौकरी मिल जाये तो ये पेशा छोड़ने के लिये तैयार हैं। उत्तरदाता वैकल्पिक व्यवसाय के रूप में मुर्गीपालन व सुअरपालन का व्यवसाय करने का विकल्प प्रस्तुत करते हैं। परम्परागत रूप से इनके परिवार में सूअर पाले जाते रहे हैं। अतः इनका प्रशिक्षण इन्हें बचपन में अपने परिवार से मिला है। 6 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसे भी हैं जो तकनीकी कार्य जैसे स्कूटर रिपेरिंयग, साइकिल मरम्मत, विद्युत उपकरण की रिपेयरिंग, ड्रायवरी आदि करने के इच्छुक हैं।

उपरोक्त विश्लेषण के आधार पर कहा जा सकता है कि बड़ी संख्या में उत्तरदाता अपने व्यवसाय से संतुष्ट नहीं हैं किन्तु वैकल्पिक व्यवसाय के रूप में उनके पास कोई निश्चित दिशा बोध नहीं है। शासन की तरफ से तकनीकी कार्य का प्रशिक्षण दिया गया ताकि ये वैकल्पिक व्यवसाय अपना सके। प्रशिक्षण में प्रशिक्षकों द्वारा उन्हें हेय दृष्टि से देखा जाना है एवं स्वयं इनकी उदासीनता के कारण इन्हें तकनीकी प्रशिक्षण में सफलता नहीं मिल सकी है। इस प्रकार सरकार के प्रसास विफल रहे हैं लेकिन इस सबके बाबजूद सफाई कामगारों में जागरुकता आ रही है।

साहित्य समीक्षा

साहित्य समीक्षा किसी भी शोध कार्य के लिये तैयार की जाने वाली रूप रेखा के लिये आवश्यक अंग होती है। प्रत्येक शोध से प्राप्त निष्कर्ष आगे किये जाने वाले शोध व शोध की वस्तुओं की ओर ध्यान आकर्षित

करते हैं अतः किसी भी सामाजिक समस्या पर शोध कार्य करने से पहले उससे सबंधित पूर्व में किये गये अध्ययनों,ग्रंथों पुस्तकों शोध प्रपत्रों आदि का सूक्ष्म अध्ययन कर लेना आवश्यक होता है इसी उद्‌देश्य से प्रस्तुत विषय पर शोध कार्य करने से पूर्व किये गये अध्ययन व अनुसंधान कार्यों का पुनर्वलोकन किया गयाहै। शोधार्थी ने शिव कुमार पाण्डेय का आलेख ''म.प्र. के हरिजन समस्या और समाधान'' 1987 में प्रकाशित हुआ है इस आलेख में हरिजन शब्द की व्युतुपत्ति पर प्रकाश डालता है। डॉ. बी आर अम्बेडकर के ग्रंथ Who were the Shudras अस्पर्श्यता में अस्पर्श्यता सम्बंधी विचारों का विवेचन किया गया। प्रोफेसर श्यामलाल की पुस्तक I Ambedkar and the bhangis 2018 की समीक्षा में बाल्मिकी शब्द का प्रयोग एंव विकास पर प्रकाश डाला है। एल.एल.सागर की 'हरिजन कौन और कैसे' 2018 में हरिजनों की समस्या पर प्रकाश डाला है। इस प्रकार शोधार्थी ने दलित सफाई कामगारों की जीवन की दशाओं व आर्थिक समस्याओं का सूक्ष्म अध्ययन किया है।

मिनाक्षी गुप्ता का शोध निबंध "भारत में महिला सफाई कामगार" जून 2019 में सफाई कामगारों से सम्बंधित कानून योजनाओं और नीतियों पर प्रकाश डाला है ।

डॉ देविका शर्मा ने अपने शोध प्रबंध "आधुनिक समाज में सफाई कर्मियों के जीवन में उत्पन सामाजिक आर्थिक चुनोतियाँ" 2019–2020 में आगरा नगर के वाल्मीकि समुदाय की आर्थिक व सामाजिक जटिलताओं से सम्बंधित अध्ययन किया है।

अध्ययन के उद्‌देश्य

प्रस्तुत शोध कार्य का विशिष्ट उददेश्य समाज के अन्दर सबसे निम्न स्तर पर अवस्थित एक ऐसे समुदाय का अध्ययन जो सदियों से दलित और अस्पृश्य है ग्रामीण क्षेत्र में आर्थिक दृष्टि से इनकी दशा काफी शोचनीय है शासन की विकास की अनेक योजनाओं का सार्थक परिणाम क्यों नही निकल रहा है।

निष्कर्ष

सर्वेक्षण में पाया गया कि आधे से अधिक 59 प्रतिशत सफाई कामगारों की स्थिति निम्न है। उत्तरदाता अपनी आय का 23 प्रतिशत मादक पदार्थों पर व्यय करते हैं। न्यूनतम व्यय शिक्षा पर करते है। अशिक्षा एवं अज्ञानता के कारण उत्तरदाताओं को सरकारी योजनाओं की जानकारी नहीं है। आधे से अधिक 65 प्रतिशत उत्तरदाताओं की अपने व्यसाय में बिल्कुल रुचि नहीं है। इनकी असंतुष्टि का कारण कम आय, घृणित व्यवसाय, निम्न जीवन स्तर तथा लोगों का दृष्टिकोंण मुख्य है। उत्तरदाता अपने बच्चों को इस व्यवसाय में लाने की इच्छा नहीं रखते हैं वे चाहते हैं कि उनके बच्चे पढ़–लिखकर सरकारी, प्रतिष्ठित नौकरी में जायें।

सुझाव

1. सफाई कामगारों में शिक्षा का प्रचार प्रसार बहुत जरुरी है जिससे उनमें व्याप्त हीनता की भावना समाप्त होगी। वो दुष्प्रवर्तियों से मुक्त होंगे इससे उनकी आर्थिक उन्नति और आत्मनिर्भरता भडेगी।
2. शासन यदि उनका उत्थान चाहता है तो शासकी योजनाओं को वाहवारिकता प्रदान करनी चाहिए। केवल लक्ष्य पूर्ति हेतु योजनायें न चलायी जाएँ बल्कि सही व सुपात्र हित ग्राही का चयन कर उसे लाभ दिया जाए।
3. प्रशिक्षण के लिए अलग से प्रशिक्षण संस्थान बनाएं जाए जिनमें मनोवैज्ञानिक व समाजवैज्ञानिक की महत्वपूर्ण भूमिका हो।
4. मधपान आदि पूर्णतः प्रतिबंधित कर दिया जाए। मधपान पर प्रतिबन्ध लगाने से इनकी आर्थिक दशा व स्वास्थ दोनों में ही सुधार होगा।
5. हितग्राही को ड्राइविंग की ट्रेनिंग, गाडी मरम्मत, पैकेजिंग का काम, दरी निर्माण आदि का प्रशिक्षण दिया जाना उचित है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *बेताई, आन्दे . वैकवर्ड क्लासेज एण्ड न्यू सोशल ऑर्डर (1980)*
2. *अम्बेडकर, बी. आर. . अस्पृश्यता मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी (1992)*
3. *सचदेवा, डी. आर. . भारत में समाज कल्याण (2000)*
4. *मध्यप्रदेश में अनुसूचित जाति आदिम जाति कल्याण अनुसूचित जनजाति विभाग (म0प्र0) 2018*
5. *प्रोफेसर श्यामलाल . आंबेडकर एंड द भंगी*
6. *भगवानदास . मैं भंगी हूँ (2014)*
7. *एल एल सागर . हरिजन कौन और कैसे (2018)*
8. *अम्बेडकर, बी. आर – Who were the Shudras (1987)*